सेमिनार के 4 प्रकार उपयोगिता सेमिनार के उद्देश्य

शिक्षा शास्त्र, सामाजिक विज्ञान शिक्षण विधि

सेमिनार उच्च अध्यापन की एक अनुदेशनात्मक प्रविधि है जिसके अन्तर्गत किसी विषय पर एक पत्र प्रस्तुत किया जाता है जिस पर बाद में सामूहिक विचारविमर्श किया जाता है ताकि विषय के जटिल पहलुओं को स्पष्ट किया – जा सके। सेमिनार समूह के लिये एक स्थिति उत्पन्न करता है जहाँ पर लोगों में आपस में उस विषय पर निर्देशित वार्तालाप चलता है।

यह पत्र एक या कई लोगों द्वारा अलगअलग प्रस्तुत किया जा सकता है। पत–्र प्रस्तुत करने वाले व्यक्ति को विषय का गहन ज्ञान होना आवश्यक है ताकि सम्बन्धित सामग्री का चयन ठीक से किया जा सके। यह संग्रहित सामग्री ही पत्र के रूप में प्रस्तुत की जाती है जो सेमिनार में भाग लेने वाले प्रतिभागियों में पत्र प्रस्तुत करने से पूर्व ही वितरित की जाती है। इसके माध्यम से विषय की संरचना प्रस्तुत की जाती है ताकि संप्रेषण प्रक्रिया ढंग से सम्पन्न हो सके।

सेमिनार के प्रकार

सेमिनार प्रमुख रूप से निम्न प्रकार के होते हैं।

1. लघु सेमिनार
2. मुख्य सेमिनार
3. राष्ट्रीय सेमिनार
4. अंतरराष्ट्रीय सेमिनार

लघु सेमिनार

इस प्रकार के सेमिनार का आयोजन कक्षा में किसी प्रकरण की व्याख्या करने के उद्देश्य से किया जाता है। इसका उद्देश्य छात्रों को सेमिनार आयोजित करने के लिए प्रशिक्षण देना है, जिससे वे इस सम्बन्ध में विभिन्न प्रकार की भूमिकायें निभा सके। यह छात्रों की उत्साहित करने वाली परिस्थिति होती है। इस प्रकार के सेमिनार का आयोजन प्रमुख सेमिनार के आयोजन से पूर्व करना उचित रहता है।

मुख्य सेमिनार

मुख्य सेमिनार का आयोजन विभागीय या संस्थान स्तर पर किसी महत्त्वपूर्ण विषय को लेकर किया जाता है। इस प्रकार के सेमिनार में संस्थान या विभाग के सभी छात्र व अध्यापक वर्ग भाग लेते हैं। ये सेमिनार विभाग में साप्ताहिक या मासिक तौर पर आयोजित किये जाते हैं। सामान्यतः इस प्रकार के सेमिनार किन्हीं विशिष्ट विषयों को लेकर आयोजित किये जाते हैं।

राष्ट्रीय सेमिनार

इस प्रकार के सेमिनार किसी परिषद् या संस्थान द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किये जाते हैं। सेमिनार के विषय से सम्बन्धित विशेषज्ञों को इस प्रकार के समिनार में आमंत्रित किया जाता है। सेमिनार का सचिव इस सम्बन्ध में सेमिनार का विषय, दिनांक, दिन. समय तथा स्थान का चयन करता है, अर्थात् सेमिनार आयोजन की सम्पूर्ण तैयारी सचिव पहले से ही कर लेता है। एन.सी.ई.आर.टी. इस प्रकार के सेमिनार का आयोजन

राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न विषयों को लेकर करती रहती है, जैसे–शिक्षा तकनीकी जनसंख्या शिक्षा, शैक्षिक विचारधाराएं **दूरस्थ शिक्षा, भारत** में शैक्षिक अनुसंधान का स्थान आदि।

अंतरराष्ट्रीय सेमिनार

अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार बड़े–बड़े अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों तथा UNESCO द्वारा अत्यधिक गूढ़ एवं अध्यापक विषयों को लेकर किये जाते हैं, जैसे–छात्र असन्तोष, अध्यापक **शिक्षा** में नवीनतम खोजें परीक्षा सुधार आदि। कोई राष्ट्र भी अन्तर्राष्ट्रीय विषयों को लेकर इस प्रकार के सेमिनार आयोजित कर सकता है लेकिन इस प्रकार के सेमिनार आयोजन में सार्थकता एवं पारदर्शिता का होना आवश्यक समझा जाता है। मात्र नाम के लिए इस प्रकार के सेमिनार का आयोजन नहीं किया जाना चाहिये।

सेमिनार की उपयोगिता

सेमिनार आयोजन के प्रमुख लाभ इस प्रकार है

1. इसके द्वारा प्रतिभागियों में विभिन्न प्रकार की योग्यताएँ विकसित करने की क्षमता प्राप्त की जा सकती है।
2. सेमिनार के माध्यम से उच्च मानसिक योग्यताओं का **विकास** किया जा सकता है,जैसेविश्लेषण –, संश्लेषण, मूल्यांकन, **सृजनात्मकता** आदि।
3. इस प्रकार के आयोजन से भावनात्मक योग्यताएं विकसित की जा सकती हैं जैसे दूसरों के प्रति सहनशीलता, विचारों में खुलापन, दूसरों के साथ सहयोग, भावात्मक लगाव, दूसरों की भावनाओं का सम्मान आदि।
4. इस प्रकार के आयोजनों में समूह व्यवहार की मर्यादा का पालन किया जाता है, अर्थात् सेमिनार की परिस्थितियों में प्रजातान्त्रिक **समाज** के मानकों का पालन ठीक प्रकार से किया जाता है।
5. सेमिनार के माध्यम से अच्छी **अधिगम** आदतों का विकास होता है, जैसेपूर्ण तैयारी –, स्वअध्ययन–, विचारविमर्श में सक्रिय साझेदारी–, आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास आदि।
6. सेमिनार अनुदेशन को अधिगमकर्त्ता केन्द्रित बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
7. सेमिनार उच्च शिक्षा तक सीमित रहने के बावजूद अनुदेशन के सभी स्तरों पर स्वाभाविक अधिगम प्रक्रिया को बढ़ावा देता है।

सेमिनार के उद्देश्य

मुख्य रूप से सेमिनार के दो उद्देश्य हैं ज्ञानात्मक तथा भावात्मक।

ज्ञानात्मक उद्देश्य

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित उद्देश्य आते हैं

1. उच्च ज्ञानात्मक योग्यताओं का विकास करना, जैसे मूल्यांकन आदि। विश्लेषण, संश्लेषण एवं
2. प्रतिक्रिया व्यक्त करने की योग्यता का विकास करना। इसके अन्तर्गत परिस्थिति का ठीक से आकलन कर उसका Valuing organizing and characterization करना आदि आता है।
3. सूक्ष्म निरीक्षण करने की योग्यता का विकास करना तथा अपनी भावनाओं को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना।
4. स्पष्टीकरण प्राप्त करने की योग्यता का विकास करना तथा दूसरों के विचारों का प्रभावीतरीके से पक्ष . लेना।
5. विषय का गम्भीरता से अध्ययन कर विचारविमर्श प्रक्रिया में भाग लेने की योग्यता विकसित करना।–

भावात्मक उद्देश्य

इसके अंतर्गत निम्न उद्देश्य आते हैं–

1. दूसरों के विरोधी विचारों को सहन करने की शक्ति विकसित करना।
2. दूसरे साथियों के साथ मिलजुलकर कार्य करने की भावना विकसित करना तथा उनके विचारों एवं – भावनाओं का सम्मान करना।
3. सेमिनार के प्रतिभागियों में आपस में भावनात्मक स्थायित्व विकसित करना।
4. प्रश्नों के पूछने एवं उनके उत्तर देने में अपने व्यक्तित्व की प्रभावी छाप छोड़ने की योग्यता विकसित करना
5. प्रतिभागियों में परस्पर अच्छे गुणों एवं कौशलों का विकास करना।
6. प्रतिभागियों में परस्पर स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित करना।
7. सेमिनार को सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में सम्पन्न करना तथा उपलब्धियों का ठीक से आकलन करना।

सेमिनार संबंधित विभिन्न भूमिकाएं

सेमिनार के सफल आयोजन के लिए भिन्न व्यक्तियों को भिन्न भूमिकाएं दी जाती है जो निम्नलिखित हैं–

संगठन करता

संगठनकर्ता सेमिनार के सम्पूर्ण कार्यक्रम की योजना तैयार करता है। वह सेमिनार के लिये उपयुक्त विषय का चयन करता है तथा इसके विभिन्न पहलुओं को विभिन्न वक्ताओं में आवंटित करता है। सेमिनार के बारे में दिनांक, समय तथा स्थान का चयन भी वह स्वयं ही करता है। यहीं सेमिनार के संरक्षक के नाम का सुझाव देता है। इस प्रकार से वह पूरे सेमिनार का विस्तृत ब्यौरा तैयार करता है।

अध्यक्ष

प्रतिभागी अध्यक्ष के रूप में किसी वक्ता का नाम सुझाते हैं जो सेमिनार के विषय से पूरी तरह अवगत हो। अध्यक्ष को अपने पद के कर्त्तव्य, अधिकारों एवं गरिमा का आभास से होना चाहिये क्योंकि सेमिनार की समस्त गतिविधियाँ उसी के द्वारा संचालित की जाती हैं। उसे सेमिनार को सफल बनाने के सम्पूर्ण प्रयास करने होते हैं और इसी आशय से यह प्रतिभागियों को विचार–विमर्श में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करता रहता है।

कुछ परिस्थितियों में उसे स्वयं को भी इस विचार–विमर्श में भाग लेना होता है। यह प्रत्येक प्रतिभागी को समुचित अवसर प्रदान करता है। अन्त में वह सम्पूर्ण विचार–विमर्श को संक्षेप में तथा अपने शब्दों में प्रस्तुत करता है। साथ ही, वह सभी प्रतियोगियों, वक्ताओं मेहमानों, निरीक्षकों आदि का धन्यवाद भी ज्ञापित करता है।

वक्ता

संगठनकर्ता सेमिनार में भाग लेने वाले वक्ताओं को विषयों का आवंटन करते हैं जिसका वे गहन अध्ययन कर अपना पत्र तैयार करते हैं। सेमिनार प्रारम्भ होने से पूर्व सभी प्रतियोगियों में इन पत्रों की छायाप्रति वितरित कर दी जाती है ताकि वे सभी स्वयं को पत्र प्रस्तुतीकरण के बाद विचार–विमर्श में भाग लेने के लिए तैयार रखें। यह प्रक्रिया विचार–विमर्श को एक लम्बे समय तक चलाने में सहायक होती है। इस सन्दर्भ में वक्ताओं को अपना पक्ष प्रस्तुत करने के लिए तथा स्वयं के बचाव के लिये तैयार रहना चाहिये। साथ ही, साथ उन्हें अपनी आलोचनाओं के लिए भी तैयार रहना चाहिये तथा सहनशीलता का परिचय देना चाहिये।

प्रतिभागी

एक सेमिनार में लगभग 25-40 प्रतिभागी होते हैं। प्रतिभागियों को सेमिनार "के विषय से पूरी तरह से अवगत होना चाहिये। उन्हें अन्य वक्ताओं के प्रस्तुतीकरण की प्रशंसा करना चाहिये तथा उसका वस्तुनिष्ठ तरीके से मूल्यांकन करना चाहिये। प्रतिभागियों में यह योग्यता होनी चाहिये कि वे लोगों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का सटीक उत्तर दे सकें व उनकी जिज्ञासाओं को शान्त कर सकें। उन्हें अपने अनुभवों के आधार पर विषय के सम्बन्ध में अपने मूल विचार प्रस्तुत करने चाहिये। स्पष्टीकरण देते समय उन्हें अध्यक्ष को भी सम्बोधित करना चाहिये। प्रतिभागियों को वक्ताओं से प्रत्यक्ष (सीधे) प्रश्न नहीं पूछने चाहिये।

निरीक्षण

सेमिनार में कुछ विशिष्ट अतिथियों एवं निरीक्षकों को भी सेमिनार की गतिविधियाँ देखने के लिए आमन्त्रित किया जाता है। इसके अतिरिक्त कुछ छात्र, शोधार्थी व सामान्य जनों को भी सेमिनार में अध्यक्ष की अनुमति से भाग लेने की अनुमति प्रदान कर दी जाती है। लेकिन ये अधिकतर मूक दर्शक एवं श्रोताओं की ही श्रेणी में आते हैं। कभी–कभी शोधार्थी या कुछ मेधावी छात्र सेमिनार के कार्यक्रमों में भाग लेने की इच्छा प्रकट करते हैं। ऐसे छात्रों या शोधार्थियों को सक्रिय रूप से सेमिनार में भाग लेने की अनुमति अध्यक्षों की इच्छा पर ही निर्भर करती है।

कार्यशाला का अर्थ, परिभाषा, उद्देश्य, क्षेत्र एवं महत्व

अनुक्रम (Contents)

- कार्यशाला (Workshop in Hindi)
- कार्यशाला का अर्थ (Meaning of Workshop)
- कार्यशाला की परिभाषा (Definition of Workshop)
- कार्यशाला प्रविधि के उद्देश्य (Aims of workshop Technique)

  - (1) ज्ञानात्मक उद्देश्य
  - (2) क्रियात्मक उद्देश्य
- कार्यशाला का क्षेत्र (Field of workshop Techninque)
- कार्यशाला में शिक्षण का क्रम (Sequence of Teaching in workshop)
- शिक्षण में कार्यशाला का महत्व (Importance of workshop in Teaching)

कार्यशाला (Workshop in Hindi)

कार्यशाला का मूलमन्त्र है– "उद्देश्य प्राप्ति के लिए आपस में मिल–जुलकर सहयोगात्मक भावना से कार्य करना।" शिक्षक अपने शिक्षण में सफलता पाने के लिए विविध/ प्रविधियों का प्रयोग करता है। कार्यशाला प्रविधि ऐसी ही एक प्रविधि है। इसी सहायता से छात्रो में क्रियात्मक पक्षीय उच्च अधिगम को सुनिश्चित करने के लिए प्रयास किया जाता है कार्यशाल (Workshop) शब्द का प्रयोग अभियांत्रिकी के क्षेत्र में अधिक किया जाता है, जैसे– रेल वर्कशाप, सड़क परिवहन कार्यशाला आदि, जहाँ पर रेल इंजन व बसों को निर्मित करने व उनकी मरम्मत की व्यवस्था होती है। कार्य करते हुए ही यहाँ पर कुछ सीखा जा सकता है। अतः इस प्रविधि में श्रम आधारित स्वयं सक्रिय रहते हुए व्यावहारिक क्रियाकलापों के अधिगम को महत्व दिया जाता है।

कार्यशाला का अर्थ (Meaning of Workshop)

कार्यशाला वह प्रविधि है जिसमें शिक्षक/छात्र वास्तविक रूप से सक्रिय रहकर कार्य करते हुए अपने व समूह के सदस्यों अनुभवो के पारस्परिक आदान–प्रदान के द्वारा किसी विषय की जानकारी प्राप्त करता है। चूंकि शिक्षक/छात्र इसमें सक्रिय प्रतिभोग करता है अतः प्राप्त ज्ञान स्थायी, विश्वसनीय व उपयोगी होता है इस प्रविधि का प्रयोग शिक्षकों / छात्रों के क्रियात्मक पक्ष के विकास के लिए किया जाता है। इसमें प्रायोगिक कार्य द्वारा ज्ञानार्जन को अधिक महत्व दिया जाता है।

कार्यशाला की परिभाष (Definition of Workshop)

डॉ. प्रीतम सिंह के अनुसार– "कार्यशाला आमने–सामने का ऐसा प्राथमिक समूह है जिसमें सामाजिक अन्तः क्रिया अधिक नजदीक तथा प्रत्यक्ष होती है और यह सदस्यों पर अधिक सामाजिक नियन्त्रण रखती है।"
शिक्षा शब्दकोष के अनुसार– "कार्यशाला एक शैक्षणिक प्रविधि है, जिसमें समान रूचियों और समस्याओं से युक्त व्यक्ति उपयुक्त विशेषज्ञों के साथ प्रायः आवासिक और कई दिवसों की अवधि में आवश्यक सूचनाएँ प्राप्त करने और समूह अध्ययन के माध्यम से समाधान निकालने के लिए मिलते है।"
उपर्युक्त आधार पर निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि कार्यशाला/ कार्यगोष्ठी परम्परागत क्रियाकलापों से परे सर्वथा नवीन, रोचक व आनन्ददायी माहौल प्रस्तुत करती है। ऐसे माहौल में शिक्षक/छात्र–छात्राएँ स्वतन्त्र होकर अपनी रूचि से कार्य करते है। फलतः उनकी अन्तर्निहित क्षमताएँ व मानसिक चिन्तन अपने वास्तविक रूप में हमारे समाने आते है।

कार्यशाला प्रविधि के उद्देश्य (Aims of workshop Technique)

(1) ज्ञानात्मक उद्देश्य

(i) शिक्षण सम्बन्धी समस्याओं का समाधान खोजना।

(ii) किसी प्रकरण के व्यावहारिक पक्ष को समझना।

(iii) शिक्षण उद्देश्यों एंव विधियों का निर्धारण करना तथा उनकी प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना ।

(2) क्रियात्मक उद्देश्य

(i) शिक्षण की विशिष्ट क्षमताओं का विकास करना।

(ii) समूह में कार्य करने व सहयोग की भावना का विकास करना।

(iii) शिक्षण की प्रभावी विधियों/प्रविधियों का निर्धारण करना।

(iv) शिक्षा व शिक्षण के नवीन उपागमों को प्रशिक्षण देना शिक्षण कौशल का विकास व सुधार करना।

कार्यशाला का क्षेत्र (Field of workshop Techninque)

शिक्षा के क्षेत्र म कार्यशाला प्रविधि बेहद उपयोगी है। इसका उपयोग शिक्षण में व्यापक रूप से किया जा सकता है। इसके क्षेत्र में निम्नलिखित कार्य सम्मिलित है–

(i) पाठ योजना के नवीन प्रारूप बनाने हेतु।

(ii) क्रियात्मक शोध के प्रयोग हेतु।

(iii) पाठ्योजना में प्राप्त उद्देश्यो को व्यवहारगत परिवर्तनों के रूप में लिखने हेतु ।

(iv) नवीन प्रकार की परीक्षाओं के प्रश्नो व प्रश्न–पत्रों के निर्माण हेतु। विविध प्रकार की प्रश्नवाली के निर्माण हेतु ।

कार्यशाला में शिक्षण का क्रम (Sequence of Teaching in workshop)

कार्यशाला में शिक्षण का क्रम निम्न प्रकार का होता है– प्रकरण/समस्या का चयन, प्रस्तुतीकरण व स्पष्टीकरण पाठ पर आधारित कार्य (समूहों में कार्य) के विविध तौर तरीको के प्रयोग का अभ्यास वास्तविक अनुभवो का आदन–प्रदान सहभागियों के साथ कार्य–कार्यो/ तैयार सामग्री की जाँच/परीक्षण/निरीक्षण निष्कर्ष (पाठ से सम्बन्धित तथ्यो का ज्ञान) ।

शिक्षण में कार्यशाला का महत्व (Importance of workshop in Teaching)

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्तित्व का सर्वांगीण व सन्तुलित विकास करना है। अतः शिक्षक का प्रमुख दायित्व यह है वह विद्यालय में ऐसा वातावरण तैयार करे जिसमें प्रत्येक बच्चा स्वयं सीखने में रूचि ले व तत्पर रहे। सीखने का ऐसा वातावरण बनाने में कार्यशाला प्रविधि अत्यन्त उपयोगी है। इसमें वास्वतिक परिस्थितियों में छात्र

समस्या समाधान का प्रयास करते है और स्वयं करते हुए सीखते है। सीखने के लिए वह अध्यापक पर निर्भर नही रहते और समुह के सदस्यों के साथ मिल–जुलकर कार्य करते हुए नवीन अनुभव प्राप्त करते है।